दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 57* ❑ *अंक-22* ❑ *दिल्ली* ❑ *सितम्बर 2019 (प्रथम)* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

अम्बेडकर मिशन–एक अग्निपथ

• डॉ. बाबूलाल चांवरिया

अम्बेडकर मिशन का अर्थ है–डॉ. अम्बेडकर का संदेश अर्थात् डॉ. अम्बेडकर का दर्शन और उस संदेश को घर–घर पहुंचाना तथा उसका आचरण करना। यह संदेश और दर्शन क्या है? इसे पूरा करना क्या अम्बेडकरानुयायियों के लिए अनिवार्य है? इसका निश्चित तौर से उत्तर हां में है। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने स्वयं कहा है, ''मेरा संदेश है–संघर्ष करो, और ज्यादा संघर्ष करो, बलिदान दो, और ज्यादा बलिदान दो। संघर्ष और ज्यादा संघर्ष। बलिदानों और दुःखों को बिना गिने व ध्यान में लाये किया गया संघर्ष ही मुक्ति का मार्ग है और कोई चारा नहीं।'' इस प्रकार अपने अनुयायियों को मिशन के कारवां को आगे बढ़ाने को कहा है। किसी भी दशा में कारवां आगे न ले जा सकें, उसे पीछे भी न धकेलें, ऐसा उन्होंने जोर देकर कहा है।

अम्बेडकर मिशन समतामूलक–जाति, वर्ण व वर्गविहीन समाज की रचना का संदेश देता है जिसमें स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा व नैतिकता का समावेश हो। ऐसे नवजीवन में सर्वज्ञ ईश्वर, परमात्मा, आत्मा, पुनर्जन्म, धर्मग्रंथों की दादागिरी इत्यादि बेसिर पैर की कल्पना न हो। आडम्बर, धार्मिक अंधविश्वास, व्यक्ति–पूजा न होकर वैज्ञानिकता और गुण–पूजा हो, ऐसा बौद्धिक समाज बने, यही मिशन का ध्येय और यही साध्य है, जिसमें शिक्षा, संगठन, प्रचार और संघर्ष ही साधन है। इन साधनों के द्वारा मूल उद्देश्य प्राप्त करना है। यही अम्बेडकर मिशन है। डॉ. अम्बेडकर अपने पथगामियों को कहते हैं कि उनका पथ अग्निपथ है। अछूतों को सामूहिक तौर पर अपनी उन्नति एवं अत्याचारों का मुकाबला करने में सामूहिक इच्छा विकसित करनी होगी। इस मिशन में लगे लोगों के बारे में बाबा साहब कहते हैं–''वे लोग धन्य हैं जो अपने समाज को ऊंचा उठाने का कर्तव्य निभाने को जिन्दा है। वे लोग बहुत अच्छे हैं जो दासता को खत्म करने के अभियान में अपना समय देते हैं, अपनी सारी शक्ति लगाते हैं। वे बहुत अच्छे होते हैं, जो यह प्रण करके चलते हैं कि चाहे सुख आये, चाहे दुख, चाहे भूख हो चाहे तूफान, चाहे मान हो चाहे अपमान, हम तब तक नहीं रुकेंगे जब तक अछूत समाज पूरी तरह इन्सानी दर्जे को प्राप्त नहीं कर लेता।'' डॉ. अम्बेडकर ऐसे स्वयंसेवक चाहते थे। क्या ऐसे स्वयंसेवक बिना बाबा साहब को समझे समर्पित सेवा दे सकते हैं? इसलिए बाबा साहब के मिशन को समझना और फिर उनके पथ पर चलना जरूरी ही नहीं वरन् अनिवार्य भी है।

धर्म के मामले में अम्बेडकर मिशन बौद्ध–धम्म को मानता है। डॉ. अम्बेडकर बौद्ध थे बुद्धइज्म को वे धर्म–निरपेक्ष जीवन पद्धति मानते थे। वे बहुसंख्यक लोगों की संस्कृति और सभ्यता अल्पसंख्यकों पर थोपने के प्रयासों का कट्टरता से विरोध करते हैं। वे हिन्दू धर्म व उसकी भगवद् गीता के त्रिगुण सिद्धान्त के प्रबल विरोधी हैं। आकाशवाणी 3 अक्टूबर, 1954 के प्रसारण में अपने मिशन का खुलासा करते हुए उन्होंन कहा था–''मेरे फलसफे (कारवा) का एक मिशन है, मुझे धर्म परिवर्तन का काम करना है क्योंकि मुझे गीता के त्रिगुण सिद्धान्त मानने वालों से वह छुड़ाना है और उन्हें अपने सिद्धान्त स्वीकार करवाना है। भारतवासी आज दो अलग–अलग विचारधाराओं के मुताबिक चल रहे हैं। हमारा राजनैतिक आदर्श स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का है, जैसा कि संविधान की प्रस्तावना में अंकित है। परन्तु सामाजिक आदर्श जैसा कि उनके धर्म में अंकित है, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे को अस्वीकार करता है।''

अतः अम्बेडकर मिशन वैज्ञानिकता को महत्व देते हुए धर्म की अफीमी जड़ता को उखाड़ फैंकने की बात कहता है। हिन्दू–धर्म की कट्टरता से पालन करने वाला घंटों पूजा पाठ में समय गंवाने वाला, हिन्दुओं के तीज त्योहार को मानने वाला कैसे अम्बेडकरवादी हो सकता है? यह विचारणीय विषय है।

डॉ. अम्बेडकर ने कई बार राजनीति को गन्दा नाला कहा है, परन्तु उन्होंने दलितों के लिये जीवन–पर्यन्त राजनीति की, उनका राजनीति करने का उद्देश्य ही दलितों को संगठित करना और राजसत्ता का नेतृत्व उन्हीं के हाथों में पहुंचाना था। राजनीति उनके मिशन का एक महत्वपूर्ण अंग है। उनके स्वयं के शब्दों में जो उन्होंने नेहरू को एक पत्र में लिखा था, ''राजनीति मेरे लिए खेल नहीं 'मिशन' है।'' 25 अप्रैल, 1948 को लखनऊ की एक सभा में बाबा साहब ने दलितों को संगठित होने का आदेश दिया ताकि वे कांग्रेस से स्वतंत्र एक नये राजनीतिक संगठन का विकास कर सके। उन्होंने अखिल भारतीय स्तर की रिपब्लिकन पार्टी का गठन इसी

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सम्पादकीय

रविदास मंदिर गिराने के विरोध में रामलीला मैदान में उमड़ा जन सैलाब

21 अगस्त, 2019, दिन बुधवार। स्थान–दिल्ली का रामलीला मैदान। तुगलकाबाद में संत रविदास जी का 600 साल पुराना दलितों की आस्था का प्रतीक रविदास मन्दिर को केन्द्र सरकार के आधीन डी.डी.ए. (दिल्ली डवलपमेंट अथारिटी) द्वारा गिराये जाने के विरोध में संत गुरु रविदास जी के भक्तों का जन सैलाब उमड़ा। दिल्ली के इतिहास में यह पहला ऐसा विरोध प्रदर्शन था जिसमें बिना जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, धर्म के भेदभाव के सभी लोगों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। यह भी पहली बार देखने में आया कि विरोधस्वरूप हाथ में नीले झंडे और बैनर लिए जितने लोग रामलीला मैदान के अन्दर थे, उससे दुगुने लोग उसके बाहर अजमेरी गेट, नई दिल्ली स्टेशन से लेकर पहाड़गंज में अम्बेडकर भवन तक फैले हुए थे।

दूसरी ओर रामलीला मैदान से लेकर जन्तर–मंतर तक रविदास मन्दिर तोड़ने के लिए भाजपा की केन्द्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए मन्दिर वहीं बनाने की मांग कर रहे थे। इस जन सैलाब में दूर–दूर तक नीले रंग के बैनर व झंडे लहलहाते नजर आ रहे थे।

तुगलकाबाद मन्दिर तोड़े जाने के विरोध में पहली बार बौद्ध, अम्बेकराईड, रविदासी, कबीरपंथी, सतनामी के साथ सिख, मुस्लिम, ईसाई धर्म के लोग भी गुरुजी के प्रति अपनी आस्था और सम्मान दिखाने के लिए रामलीला मैदान के मंच पर एकत्रित हुए थे और इस मामले में एकजुटता दिखा रहे थे।

तुगलकाबाद मन्दिर तोड़ने के विरोध प्रदर्शन में देश के सभी प्रदेशों से गुरु रविदास जी के भक्त एक दिन पहले दिल्ली पहुंचने लगे थे। दिल्ली के लोगों ने उनके ठहरने व भोजन का प्रबन्ध अम्बेडकर भवन (पहाड़गंज), विश्रामधाम (देवनगर), रविदास मन्दिर (आर.के. पुरम), बगीची रविदास (अजमेरी गेट) में तो की थी, इसके साथ ही सिख भाइयों ने प्रदर्शनकारियों के लिए लंगर (भोजन) व आवास का प्रबन्ध दिल्ली के सभी बड़े गुरुद्वारों में किया था, क्योंकि उनका कहना था कि गुरु रविदास जी भी उनके भी गुरु हैं और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में रविदास जी के 40 पद हैं। सभी गुरुद्वारों में उनकी आरती से अरदास शुरू होती है और उनकी वाणी को बड़ सम्मान के साथ गाया जाता है। उनके मन्दिर को तोड़ने से हमारी भावनायें भी आहत हुई हैं और हमारी मांग है कि सरकार सम्मान के साथ गुरु रविदास जी का मन्दिर वहीं बनवाये।

पहले यह रविदास मन्दिर का विरोध प्रदर्शन नई दिल्ली के जन्तर–मंतर पर होना था, पर पूरे देश से आने वाले प्रदर्शनकारियों के जन सैलाब से घबराबर दिल्ली पुलिस ने प्रदर्शन का स्थान कुछ घंटों पूर्व जंतर–मंतर से बदलकर रामलीला मैदान कर दिया। वह सोचती थी कि इससे प्रदर्शन इतनी जल्दी रामलीला मैदान नहीं पहुंच पायेंगे, और उनकी भीड़ बिखर जायेगी। केन्द्र सरकार के इशारे पर दिल्ली पुलिस का यह षड्यंत्र भी नाकामयाब हो गया और प्रदर्शनकारियों का जन सैलाब ने जन्तर–मंतर की जगह से लेकर रामलीला मैदान तक की जमीन को अपनी 3-4 लाख की भीड़ से ढक दिया। प्रदर्शनकारियों के

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/–
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

पृष्ठ 1 का शेष...अम्बेडकर मिशन-एक अग्निपथ

उद्देश्य के लिये किया ताकि दलितजन (जिसमें अनुसूचित जातियां, जनजातियां, पिछड़ी जातियां व अल्पसंख्यक) मिलकर सरकार का नेतृत्व अपने हाथों में ले सके। इसी सभा में उन्होंने कहा, ''यदि आप लोग (दलित) संगठित हो जाओ तो उनकी (नेहरू, पटेल इत्यादि सवर्णों की) सरकार भी आपके हाथ में आ सकती है।'' लेकिन उनकी मृत्युपरांत दलितों का नेतृत्व अवसरवादी राजनीतिज्ञों के हाथों का खिलौना बन गया। डॉ. अम्बेडकर मिशन का सबसे बड़ा कार्य राजनैतिक नेतृत्व अपने हाथों में लेना है न कि अपने समाज का राजनैतिक नेतृत्व सवर्णों को सुपुर्द करना है।

उन्हें कैसे अम्बेडकरवादी कहा जा सकता है जो अन्य दलों को मजबूत कर रहे हैं? क्या वे अपने हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी नहीं मार रहे हैं? क्या उन्हें अम्बेडकरी मंच पर आने का नैतिक अधिकार है? यदि नहीं तो उन पर प्रतिबन्धता क्यों नहीं?

डॉ. अम्बेडकर एक मूल्य व सिद्धान्त के लिए भारतीय राजनीति के क्षितिजाकाश पर ध्रुव तारे की तरह आलोकित होने वाले एक प्रखर पुंज हैं, जो केवल मशहूर ही नहीं, अपितु महान भी थे। गांधी, जिन्ना, नेहरू तथा अन्य लोग प्रसिद्धि के घेरे में ही सिमटे रहे, इनकी महानता डॉ. अमबेडकर के निश्चल देश–प्रेम, राष्ट्रीय एकता व अखंडता तथा मानव नहीं किया, परन्तु जिद करना भी उनके हिसाब से एक अकिंचन प्राणी का कार्य है। वे स्वयं कहते हैं कि जिद करना एक गधे का काम है। हमें परिस्थितियों को समझकर समायोजन करना चाहिये ताकि समाज को एक गति व राह दे सकें।

आज लोग जिद व प्रतिद्वंद्व में उलझ रहे हैं, उनके मूल मानववाद को भूल बैठे हैं। उनका दर्शन ठोस, टिकाऊ व हकीकती है, जिसमें कोई आवरण नहीं है, समझौता नहीं है, वह स्पष्ट व नीतिगत है। सिद्धान्तों को धर्म नहीं बनने देना चाहिए, इनकी बदौलत मार्क्स से भी अधिक स्पष्ट शब्दों में उन्होंने मजदूर वर्ग का नेतृत्व सम्भाला जो आज हमारे समाज में हो रहा है, परन्तु प्रतिगामी ताकतें प्रतिक्रियावादी शक्तियां व यथास्थितिवादी साजिशें उन्हें विफल करने में लगी हैं। पहले जिन लोगों के लिए डॉ. अम्बेडकर घृणा के प्रतीक थे, आज उन्हीं लोगों के चहेते बन गए हैं। यह अपने वर्ग पर आने वाली आंच की प्रतिगामी रुख देने वाली साजिश है, जिसे हर एक अम्बेडकरवादी को समझना चाहिए। कई लोग स्वयं–भू अम्बेडकर बन गये हैं। वे अम्बेडकर नहीं, उनके अनुयायी बनें, उनके मार्ग का अनुसरण करें। अम्बेडकरवाद– अगर कोई ऐसा कोई वाद है तो वह दर्शन की गहराईयों में खोजा जा तथा उपलब्धियों का समाजहित में लाभ–हानि का मूल्यांकन नहीं किया जाता तब तक यह कहना कठिन है कि कौन सी संस्था या कौन सा कार्यकर्ता समाज–हितैषी है या कौन सी संस्था या कार्यकर्ता समाज–घातक है। कौन अम्बेडकर मिशनरी है या कौन मिशन का अवरोधक है?

बहुत सी संस्थाएं और राजनीतिक पार्टियां बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के मिशन या उद्देश्यों की पूर्ति के लक्ष्य का नाम लेकर या अपना अम्बेडकरी स्वरूप बनाकर अम्बेडकरवाद की जड़ें खोखली कर रही हैं। दिखने दिखाने को तो वे अम्बेडकरी हैं पर वाद फैलाने या पनपाने के वक्त कोई गांधीवाद, कोई हेडगवारवाद तो कोई लेलिनवाद फैला रही हैं, जिससे बाबा साहब का बढ़ा हुआ कारवां फिर पीछे चला जाता है। सही मायने में ऐसे दोगले लोगों को समाज में नंगा करना चाहिए। बहुत से अम्बेडकर बनने वाले आज भी हिन्दूवाद के रीति–रिवाज, तौर–तरीके, आचार–विचार नहीं छोड़ पाये हैं। अपने को प्रगतिशील कहने वाले ये लोग आपस में जाति–पांति के नजरिए से व्यवहार करते हैं और एक दूसरे को नीचा गिराने में लगे रहते हैं जिसमें बाबा साहब का जाति एवं वर्ग–विहीन समाज का निर्माण ही रुक जाता है। क्या वास्तव में वे अम्बेडकरी हैं?

साथ में अन्य संस्थाओं को भी ऐसे आयोजन करने की प्रतियोगिता में उतारा है ताकि समाज–कार्य, समाज सेवा की स्पर्धा बढ़े। स्पर्धा बढ़ी या नहीं, लेकिन संस्थाओं का अम्बार–सा लग गया और पचासों संस्थाएं प्रायः देखने सुनने में आ रही हैं। बहुत सी तो शैशवकाल में ही दम तोड़ती नजर आती हैं। कुछ मृतप्रायः पड़ी हैं तो कुछ शिथिल पड़ी हैं, कुछ संस्थाओं के कभी–कभार लेटर पेड नजर आते हैं तो कुछ बोगस संस्थाएं भी हैं जो भूमि आवंटन, बैंक ऋण, सरकारी अनुदान का सपना तो कोई किसी को एजेन्सियां दिलाने की आड़ में भ्रष्टाचार में लिप्त है। कुछ सामाजिक स्वरूप का आवरण धारण करके पारिवारिक समितियां बनाकर सहकारिता का लाभ दिन दुगने रात चौगुने उठा रही हैं। इन्होंने अनुसूचित जातियों, जनजातियों, पिछड़ी जातियों व अल्पसंख्यक लोगों के जीवन–स्तर को ऊंचा उठाने का दिव्य स्वप्न दिखा रखा है ऊपर से बाबा साहब की सामाजिक क्रांति के कोटेशनों का मुलम्मा भी चढ़ा रखा है। ये संस्थाएं कभी–कभी राजनीतिक नेताओं के हित में या चुनाव–प्रचार में अपीलें भी निकाल देती हैं। इन संस्थाओं के पदाधिकारी धड़ल्ले से चुनावी या दलगत राजनीति भी कर लेते हैं। जिससे बाबा साहब का दलित राजनीति का, दलितों के लिए उभार का सपना 'उदित राज' जैसी बुलन्दी उनमें कहां? अम्बेडकर जयंतियों जैसे पर्वों पर भी आने से कतराते हैं कि कहीं उनकी दलित जाति के रूप में पहचान न हो जाये। इन अवसरों पर हमें उनके दोगले आचरण की निन्दा कर उन्हें सही मार्ग पर लाना चाहिए। उन्हें सामाजिक मंच पर आने को बाध्य करना चाहिए क्योंकि समाज उनसे बहुत सी अपेक्षाएं रखता है।

हमारे जन प्रतिनिधियों का तो कहना ही क्या? देश में बलात्कार, हत्या, भूमि हड़पने, सामाजिक उत्पीड़न, छुआछूत, निलम्बन, पदोन्नतिरोधक जैसे दलित–दहन के मामले बढ़ते जा रहे। वे कभी सार्वजनिक रूप से उनकी निन्दा तक नहीं करते। उत्पीड़न की घटनाओं पर हम को कभी सदनों में बोलते नजर नहीं आते। निष्कर्ष के रूप में वे हमारे प्रतिनिधि हैं ही नहीं। वे तो अपनी–अपनी पार्टियों के नौकर हैं। पार्टियों के लिए हमारे समाज की भीड़ इकट्ठा करते हैं और अपना निहित स्वार्थ सिद्ध करते हैं। कभी–कभी तो वे समाज के संगठन को ऐसा तहस–नहस करवा देते हैं उनके इशारों पर कार्यकर्ता दूसरे कार्यकर्ता का चरित्र हनन से लेकर मार–पीट भी करने से नहीं चूकते। बाबा साहब के अनुयायियों को अपने जन प्रतिनिधियों के कार्यों पर भी खुलकर विचार करना चाहिए। इनके चमचों का बड़ा ही महत्व है। समाज की

द्वारा शोषण के प्रति विद्रोह की अप्रतिम ज्वाला में आज भी प्रखर से प्रखर होती जा रही है।

उनका पथ बड़ा कठिन है, जिसमें किसी प्रकार का लागलपेट नहीं, परछिद्रान्वेषण की वहां कोई जगह नहीं है। विरोध के लिये कभी विरोध नहीं, परन्तु शोषण के अप्रतिम साधनों के प्रति क्रान्ति का बिगुल है। उनके खुद के शब्दों में कहें तो वे सदैव अपने घृणा व प्रेम में तीव्र रहे हैं, अगर ऐसा नहीं होता है तो कई भ्रम पैदा होते हैं व विकास की गति यत्र–तत्र बहने लग जाती है। अतः वे सदैव अपने उद्देश्यों से स्पष्ट रहे। आज समाज में कई लोग ऐसे हैं, जब उनके व्यवहारिक पक्ष पर चोट होती है तो वे सिद्धान्त पर आ जाते हैं और सिद्धान्त की बात पर चोट होती है तो व्यवहार पर आ जाते हैं। बात इन दोनों की नहीं है, बात इन दोनों के बीच खाई पाटने की है। हो सकता है ऐसा करने से गलतियां हो जाये, परन्तु चुप रहने से बेहतर है गलती करना, ऐसा उनके मिशन का एक अंग है।

रानाडे, गांधी और जिन्ना नामक प्रसिद्ध समालोचनात्मक पुस्तक में वे स्पष्ट कहते हैं कि ''यह सम्भव हो सकता है कि मैं गलतियों पर हूं लेकिन मैंने सदा उचित समझा है कि दूसरों के पथ–प्रदर्शन और निर्देशों को स्वीकार करने तथा चुप बैठे रहने और स्थितियों को बिगड़ने देने से तो गलतियां करना कहीं श्रेयस्कर है।'' डॉ. अम्बेडकर का पहले समझौता करने वाला पहलू नहीं है, उन्होंने सिद्धान्तों से कभी समझौता सकता है। विज्ञान की कसौटी पर परखा जा सकता है व सिद्धान्तों के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। उसे हम सबको अंगीकार करना चाहिए यह किसी अग्निपथ से कम नहीं है। भारतीय समाज की विद्रूप विषमता में समता की बात, व्यवहार व सिद्धान्त की एकरूपता, सिद्धान्तों की सत्यता, उनका मनन व अनुशीलन निसन्देह कठिन ध्येय है। इस प्रज्ञा को गहनता से समझना और आचरण करना ही बाबा साहब का पथ है।

आईये! आप और हम सभी उनके मिशन को जाने–परखें व उसका अनुशीलन करें, तभी अभिनव समाज की उत्पत्ति व विकास सम्भव होगा अन्यथा स्वार्थों के घेरे में, संकीर्ण मनोवृत्ति में हम अपना अभीष्ट ही दांव पर लगा देंगे। उस महान् व्यक्ति की भाषा को अंगीकार करें, शब्दों का अर्थ समझें व अग्निपथ पर निकल चलें। एक कवि के शब्दों में यह अग्निपथ कैसा है ''जो घर फूंके आपना, चले हमारे साथ...''

डॉ. अम्बेडकर मिशन, दलितोत्थान एवं जन–जागरण के नाम से कई सामाजिक संस्थाएं देश–विदेश में कार्य करने का दावा करती हैं। ये संस्थाएं बढ़ा–चढ़ा कर अपने उद्देश्य एवं कार्यक्रम घोषित कर लोगों की सेवा करने का स्वांग रचती हैं। उनके दावों में कितना दमखम है, यह देखना समाज के लोगों का दायित्व है। कौन–कौन सी संस्थाएं समाज में रचनात्मक कार्य कर रही हैं और उनके कार्यों के लेखों–जोखों, आय–व्ययों

अम्बेडकरवादियों का एक दूसरा ही स्वरूप पाक्षिक हकदार ने अपने एक अंक में प्रस्तुत किया है, ''अम्बेडकर जयंती या निर्वाण दिवस पर लगभग सभी दलित नेता किसी न किसी राजनेता को बुलाने की ताबड़तोड़ कोशिश में लगे हुए हैं, तो किसी राजनेता ने पहले से ही अपने चमचों को पैसा देकर अपने ढंग से भीड़ इकट्ठा कर उनका भाषण करवाने की व्यवस्था कर ली है।'' इस पर सम्पादक ने प्रश्न उठाया, ''क्या हम उनके सहारे के बिना, उनको बुलाये बिना जन्म–दिन या निर्वाण दिन नहीं मना सकते? अपने अन्दर झांके कि हम कितने स्वावलम्बी हैं? हम आज भी दल पिछलग्गू और सवर्णों के गुलाम हैं।'' वे कैसे अम्बेडकरी हैं जो उनसे अलग होकर अपने लोगों के साथ जुड़ने का साहस भी नहीं कर पाते? और उस महामानव के पवित्र दिवस का भी राजनीतिक लाभ उठाने से नहीं चूकते। समाज इस पर प्रतिक्रिया करे। ऐसा वर्षों से हो रहे कृत्य पर चिन्तन करे।

हम लोग संस्थाओं के माध्यम से या सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वाह के रूप में वर्ष भर कार्य करते हैं। समाज को कम से कम एक दिन तो मूल्यांकन करना चाहिये। देश में 1985 से पूर्व लगभग डॉ. अम्बेडकर मिशन में शिथिलता थी। भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने वैचारिक जागरण के निरन्तर कार्यक्रम आयोजित किए तथा साहित्य प्रचार–प्रसार पर समाज में चेतना का कार्य तो किया ही है टूट जाता है।

अम्बेडकर जयंती के पावन एवं वार्षिक संगम के अवसर पर हम एक नजर अपने समाज के अधिकारियों, कर्मचारियों, दौलतवाले लोगों के क्रियाकलापों पर डालें तो निराशा ही होगी। बाबा साहब ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में शिक्षित लोगों को उल्हाना दिया कि वे शायद भूल गये हैं कि उनके लिये शिक्षा के द्वार बन्द थे, कितने संघर्षों के बाद उन्हें हमने बड़ी–बड़ी कुर्सियों और बड़े–बड़े वेतनों के अधिकारी बनाये। आज वे अपने समाज के दर्दों को भूल चुके हैं। मार्च 1956 में बाबा साहब का दिया उपालम्भ आज भी अपने स्थान पर अडिग है।

देश में उच्च पदों पर हमारे हर जिलों में सौ से भी अधिक प्रशासनिक अधिकारी हैं, हजारों राजपत्रित भी हैं, कई ठेकों, एजेंसियों, पेट्रोल–पम्पों के मालिक व भू–स्वामी भी हैं, लेकिन समाज–विकास में उनका तनिक भी योगदान नहीं है, वे केवल अपने लिए या अपने परिवार के लिये वैभवशाली साधन जुटाने और उच्च लोगों की नजदीकी के चक्कर में न्यात जात और दलित समाज को ही भूल बैठे हैं। न तो उनका समाज में नैतिक योगदान है, न आर्थिक। चंद अधिकारियों के चेहरे सभा–सम्मेलनों में कभी–कभार नजर आते हैं। इस प्रकार शिक्षितों ने तो एक तरह से समाज को धोखा ही दिया है। अनुचित धन–संग्रह के आरोपों और स्थानांतरणों तथा निलम्बनों से बचने के लिये सत्ता के दलालों के गुलाम बने दब्बूपन से जी रहे हैं। मुखबरी सच्ची–झूठी खबरों से नेताओं की नजदीकी को वे सदैव बनाए रखते हैं। चाहे किसी का शासन हो, वे उन्हीं के खास व्यक्ति बन जाते हैं। ऐसे लोगों पर भी एक विहंगम दृष्टि डालें तो काफी कुछ अपने आप समझ में आ जायेगा।

इस प्रकार हमारा दलित–समाज क्षुद्र स्वार्थों के घेरे में अपने ही विकास के मार्गों को अवरुद्ध किये, अपने ही कल्याण या संगठन में भारी गतिरोधक स्वयं बना बैठा है। समाज चाहे तो इन गतिरोधक को दूर कर सकता है लेकिन समाज सामूहिक रूप से सच कहने या कोई उत्तरदायित्व लेने का साहस ही नहीं करता इसलिये उसे अपनों और सवर्णों के शोषण का शिकार होना पड़ रहा है।

डॉ. अम्बेडकर के अग्निपथ पर चलने के लिए जब तक निस्वार्थी, त्यागी, सेवाभावी समर्पित कार्यकर्ता उत्सर्ग देने के लिए आगे नहीं आयेंगे तब तक डॉ. अम्बेडकर का मिशन पूरा नहीं हो सकेगा और ना ही उनका सपना। इसलिए डॉ. अम्बेडकर के मिशन को पूरा करने के लिए हमें उनके बताये हुए रास्ते पर चलना होगा, इसके लिये डॉ. अम्बेडकर के सभी तरह के विचारों को अच्छी तरह समझना होगा और उसका जीवन के आचरण भी करना होगा। जीवन में पारदर्शिता होनी अनिवार्य है, जो हम बाबा साहब की बात करें तो उनके सिद्धान्तों को भी अपनाएं।इसलिए अम्बेडकर मिशन एक अग्निपथ है। •

भाजपा और आरएसएस के दलित प्रेम और स्त्री सम्मान का सच

• सत्यनारायण (मजदूर बिगुल)

आज भारत का कोई भी नागरिक, व्यक्ति जिसके पास थोड़ा भी विवेक होगा वह जात–पांत और स्त्रियों के प्रति दोयम व्यवहार को किसी भी रूप में समाज के लिए खतरनाक कहेगा। आजादी की जिस लड़ाई में भारत के पुरुषों के साथ महिलाएं कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ी, हर एक जात धर्म के लोग उठ खड़े हुए। बराबरी आर समानता के विचारों के नए अंकुर इसी आजादी के दौरान फूटे। देश के क्रान्तिकारियों ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहां सभी को बराबरी और अधिकार प्राप्त हों, वहीं आरएसएस और मुस्लिम लीग ने लोगों को सदियों पुरानी रूढ़ियों और बेड़ियों में जकड़ने के लिए अपनी आवाज उठायी। और अपने इस गंदे मंसूबों के लिए बहाना बनाया प्राचीनता का, संस्कृति का और लोगों के आंख पर पट्टी चढ़ाने की कोशिश की धर्म की।

आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक ओर तो बेटी के साथ सेल्फी फोटो खींचकर महिलाओं को बराबरी का दर्जा देने की नौटंकी करते हैं, वहीं दूसरी तरफ वे कहते हैं कि वे 'गोलवलकर द्वारा गढ़े हुए स्वयंसेवक हैं, उसी गोलवलकर द्वारा जिसका विचार था कि इस देश में संविधान के रखना चाहते हैं वे कहते हैं–

हिन्दू समाज ही यह विराट पुरुष है, सर्वशकितमान की स्वयं की अभिव्यति है! यद्यपि वे हिन्दू शब्द का प्रयोग नहीं करते किन्तु 'पुरुष सूक्त' में सर्वशक्तिमान के निम्नांति विवरण से स्पष्ट है। उसमें कहा गया है कि सूर्य और चन्द्रमा उसकी आंखें हैं। नक्षत्र और आकाश उसकी नाभि से बने हैं। यथा ब्राह्मण उसका मुख, क्षत्रिय भुजाएं, वैश्य उसकी जंघाएं तथा शूद्र पैर हैं। इसका अर्थ है कि समाज जिसमें यह चतुर्विधा व्यवस्था है अर्थात हिंदू–समाज हमारा ईश्वर है। (एम.एस. गोलवलकर, विचार नवनीत, पृष्ठ 37-38)

गोलवलकर ऐसे समाज के पक्षधर हैं जिसमें शूद्रों (आज की दलित और ओबीसी जातियां) हिन्दू समाज के पैर हों अर्थात् निचले पायदान पर रहने के लिए अभिशप्त। उनके लिए बराबरी का कोई अर्थ न हो। समाज में बराबरी की जगह पदानुक्रम की उसी पुरानी–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वाली व्यवस्था के पक्ष में गोलवलकर खड़े हैं। कोई भी न्यायप्रिय व्यक्ति गोलवलकर के इस विचार से नफरत ही करेगा। गोलवलकर के लिए समाज में जातिवाद और अशिक्षा जैसी बुराइयों से कोई फर्क नहीं पड़ता है, वे महज पुनर्जागरण से कोई लेना–देना नहीं है हम एक बार फिर इस बात को रेखांकित करना चाहते हैं कि हिन्दू सामाजिक ढांचे की कोई ऐसी तथाकथित कमी नहीं है, जो हमें अपना प्राचीन गौरव प्राप्त करने से रोक रही है।

आज इतिहास और समाज के बारे में आंखें खोलकर देखने वाले हर इंसान को यह दिखाई दे रहा है कि यह सामाजिक बुराइयां हमारे समाज का कितना अहित कर रही हैं लेकिन यह बात संघ नहीं देख सकता। गोलवलकर 'मनुस्मृति' की प्रशंसा करते हुए उसे लागू करने की वकालत करते हैं। वे कहते हैं मनु की विधि स्पार्टा के लाइकरगुस या पर्शिया के सोलोन से बहुत पहले लिखी गयी थी। आज इस तरह की विधि की जो मनुस्मृति में अल्लिखित है, विश्वभर में सराहना की जाती रही है और यह स्वतः स्फूर्त धार्मिक नियम पालन तथा समानुरूपता पैदा करती है। लेकिन हमारे संविधान पंडितों के लिए उसका कोई अर्थ नही है। (आर्गेनाइजर, 30 नवम्बर 1949, पृष्ठ 3)

गोलवलकर की भाँति ही वी.डी. सावरकर के मन में भी 'मनुस्मृति के

(VIII/271)

शूद्र अभिमान से द्विजों को ध र्म उपदेश करे तो राजा उसके मुख और कान में खौलता तेल डलवाए। (VIII//272)

शूद्र द्विजों को अपना जिस अंग से मारे उसी अंग को (राजा) कटवा डाले, यही मनु जी की आज्ञा है। (VIII//279)

नीची जाति का ऊंची जाति वालों के साथ अभिमान से बैठना चाहे तो उसकी कमर में दाग करके देश से निकाल दें। (VIII//281)

ब्राह्मण का सिर मुंडवा देना की प्राणान्तक दंड देना है, दूसरों को प्राणान्तक का विधान है। (VIII/ /379)

स्त्रियों के बारे में मनुस्मृति में कहा गया है कि –किसी लड़की, युवा स्त्री या बुजुर्ग औरत को भी स्वतन्त्रातापूर्वक अपने मन से कुछ नहीं करना चाहिए यहाँ तक कि अपने घर के भीतर भी नहीं (V/ 147)

दिन और रात दोनों में ही एक औरत को घर के पुरुषों पर आश्रित रहना चाहिए। और अगर वे शारीरिक सुख में संलग्न होना चाहती हैं तो उन्हें निश्चित तौर पर किसी पुरुष

जिस बात को शहीद भगतसिंह समाज के लिए शर्म कही बात कहते हैं, संघी गोलवलकर और सावरकर उसी बात पर गर्व प्रकट करते हैं–भगतसिंह ने भारतीय समाज की इसी गैर बराबरी पर कहा कि कुत्ता हमारी गोद मे बैठ सकता है। हमारी रसोई में निःसंग फिरता है, लकिन अगर एक इंसाान का हमसे स्पर्श हो जाये तो बस धर्म भ्रष्ट हो जाता है। (भगतसिंह और उनके साथियों के उपलब्ध सम्पूर्ण दस्तावेज, पृष्ठ–267)

8 अप्रैल, 1929 को असेम्बली में बस फेंकने के बाद क्रान्तिकारी भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने पर्चा फेंका था जिसमें उन्होंने लिखा था :

''हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं। हम ऐसे उज्ज्वल भविष्य में विश्वास रखते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण शान्ति और स्वतंत्रता का अवसर मिल सके।'' (भगतसिंह और उने साथियों के उपलब्ध सम्पूर्ण दस्तावेजख पृष्ठ–332)

हमें यह तय तो करना ही होगा कि हमें शहीद भगतसिंह और उनके साथियों के सपनों का भारत चाहिए जिसमें हर स्त्री–पुरुष को समानता और बराबरी मिले या संघ भाजपा के मंसूबों का जलता हुआ अन्यायपूर्ण

रूप में 'मनुस्मृति' को लाना चाहिए जिसमें दलितों और महिलाओं के बारे में भयानक गैर बराबरी और अपमान–अत्याचार की बातें कही गयी हैं। दूसरी ओर, आजादी के दौरान अमर शहीद भगतसिंह और उनके साथी दलितों, अछूतों को जागने का आह्वान करते हैं और कहते हैं कि हम तो साफ कहते हैं कि उठो, अछूत कहलाने वाले असली जन सेवकों उठो–अपना इतिहास देखो। यह पूंजीवादी नौकरशाही तुम्हारी गुलामी का असली कारण है उठो और वर्तमान व्यवस्था के विरुद्ध बगावत खड़ी कर दो। धीरे–धीरे होने वाले सुधारों से कुछ नहीं बन सकेगा। सामाजिक आन्दोलन से क्रान्ति पैदा कर दो तथा राजनीतिक और आर्थिक क्रान्ति के लिए कमर कस लो। तुम ही तो देश के मुख्य आधार हो, वास्तविक शक्ति हो, सोये हुए शेरों! उठो, और बगावत खड़ी कर दो। (भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज, सं–सत्यम् पृष्ठ 270)

भगतसिंह के लिए क्रान्ति का अर्थ था 'क्रान्ति जनता के लिए जनता के हित में' अर्थात् व्यापक आवाम के लिए समानता और बराबरी। लेकिन संघ भारत के लिए एक ऐसा विधान चाहता है जो बराबरी के बुनियादी उसूलों को ही इनकार करता है। गोलवलकर हिन्दू समाज की सदियों पुरानी सामाजिक बुराइयों को जिन्दा एक उन्मादी हिन्दू राष्ट्र चाहते हैं। अपनी इस बात के समर्थन में गोलवलकर कहते हैं।

महाभारत, हर्षवर्धन, या पुलकेशी के समय को देखिये, जाति आदि जैसी सभी तथाकथित बुराइयां उन दिनों भी आज से कम नहीं थीं और इसके बावजूद हम गौरवशाली विजेता राष्ट्र थे। क्या जाति, अशिक्षा आदि के बन्धन तब आज से कम कठोर थे जब शिवाजी के नेतृत्व में हिंदू राष्ट्र का महान उन्नयन हुआ था? नहीं ये वे चीजें नहीं हैं जो हमारी राह का रोड़ा हैं (गोलवलकर, 'वी आर अवर नेशनहुड डिफाईन्ड' भारत पब्लिकेशन, नागपुर 1939 का हिन्दी अनुवाद 'हम या हमारी राष्ट्रीयता की परिभाषा' पृष्ठ 161) जब भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारी और आजादी के लड़ाई के दूसरे नेता अछूत समस्या, जातिवाद, स्त्रियों की दोयम स्थिति, अशिक्षा आदि सामाजिक बुराइयों को भारतीय समाज का शत्रु मानते हैं वहीं संघ के गोलवलकर को देश में कोई सामाजिक बुराई नजर नहीं आती। क्योंकि ब्राह्मणवादी मानसिकता से भरे गोलवलकर को हर तरफ महानता ही दिख रही थी। शहीदों के विचारों के खिलाफ जाते हुए वे कहते हैं–

हमें यह देखकर दुःख होता है कि कैसे हम इस राष्ट्रविरोधी काम में अपनी ऊर्जा बर्बाद कर रहे हैं और दोष सामाजिक ढांचे तथा दूसरी ऐसी चीजों पर मर रहे हैं जिनका राष्ट्रीय प्रति बहुत सम्मान' है। वे कहते हैं–

'मनुस्मृति' वह पवित्र पुस्तक है, जो वेदों के बाद हमारे हिन्दू राष्ट्र में सर्वाधिक पूजनीय है और जो प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति, रीतिरिवाजों, हमारे विचारों तथा कर्मों का आधार बन गई है। सदियों से इस पुस्तक ने हमारे राष्ट्र के आध्यात्मिक और दैवीय पथ के लिए दिशानिर्देश निर्मित किए हैं। आज भी करोड़ों हिन्दू अपने जीवन और क्रियाकलाप मे जिन नियमों का पालन करते हैं, वे 'मनुस्मृति' ही हिन्दू कानून है। यह बुनियादी बात है। ('सावरकर समग्र', खंड 4, पृष्ठ 461, प्रभात, नई दिल्ली)

जिस 'मनुस्मृति' की इतनी प्रसंशा गोलवलकर आध्र उसके गुरु सावरकर कर रहे हैं देखिये उसमें दलितों और स्त्रियों के बारे में कितनी अपमानजनक और क्रूर बातें की गई हैं।

दलितों के बारे में मनुस्मृति में कहा गया है कि : परमात्मा ने शूद्रों का एक ही काम बताया है, कि ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य की भक्ति से सेवा करना (I/91)

कोई शूद्र द्विज का कठोर वाणी से अपमान करे तो उसकी जाभ काट ली जाए, क्योंक शूद्र पैर से पैदा हुआ है। (II/270)

यदि नाम और जाति को लेकर द्वेष से शूद्र द्विज जातियों को गाली दे, उस शूद्र के मुख में अग्नि में तपाई दस अंगुल की कील डालें। के नियंत्रण में रहना चाहिए। (IX/2)

उसका पिता बचपन में उसकी रक्षा करता है, पति जवानी में उसकी रक्षा करता है और पुत्र वृद्धावस्था में उसकी रक्षा करता है। एक स्त्री कभी भी स्वतन्त्रता के योग्य नहीं होती। (IX/3)

पति को अपनी पत्नी को अपने धन को एकत्र करने तथा खर्च करने के काम में, (घरेलू कामों में) हर चीज को साफ–सुथरा रखने के काम में, धार्मिक कर्तव्यों के पालन में, भोजन पकाने के काम में तथा घरेलू बर्तनों के देखभाल के काम में लगाना चाहिए। (IX/11)

औरतें सुंदरता की परवाह नहीं करती, न ही उनके लिए आकर्षण उम्र से तय होता है, उनके लिए यही बहुत है कि 'वह पुरुष है'। वे स्वयं को सुंदर–असुंदर किसी को भी समर्पित कर देती हैं। (IX/14)

औरतों के लिए पवित्र मंत्रों द्वारा कोई पुनीत अनुष्ठान नहीं किया जाता है। इसलिए यह नियम स्थापित है औरतें जो शक्तिहीन और बुद्धिहीन हैं तथा वैदिक पाठ के ज्ञान से वंचित हैं। वे स्वयं असत्यता की ही तरह अपवित्र हैं–यह पक्का नियम है। (IX/18) (मनु के निर्देशों का यह चयन मैक्समूलर की पुस्तक **'ला ऑफ मनु'** से किया गया है जो उनके द्वारा 'मनुस्मूति' का अनुवाद है।)

मुल्क।

आरएसएस हमेशा अपनी बात 'भारतीय सभ्यता', 'भारतीय संस्कृति' का नाम लेकर शुरू करता है। लोगों के बीच ऐसे तथाकथित शुद्धतावाद का प्रचार करता है जो न तो भारत में कहीं था और न ही आज है। इसकी सभ्यता और संस्कृति भारत की नहीं अपितु संघ की अपनी कल्पित और कट्टर, बांटने वाली है। एक सामान्य व्यक्ति भी समझ सकता है कि चाहे प्राचीन काल हो या आज का समय इतने बड़े देश में लोगों के अलग–अलग रीति–रिवाज रहे हैं। लेगों की अलग–अलग भाषा रही है। लोगों के अलग–अलग मूल्य–मान्यताएं रहे हैं तथा अनेक धर्मों के माननेवालों के बीच उनके धार्मिक दृष्टिकोण भी अलग–अलग रहे हैं। ऐसे में भाजपा तथा संघ पूरे भारत की एक संस्कृति की जो बात करता है वह एक कल्पित वर्चस्वशाली विचार से अधिक कुछ नहीं है।

भारत में प्राचीन काल में भी कोई एक सनातन धर्म ही रहा हो ऐसा नहीं है। इसी देश में बौद्ध धर्म और जैन धर्म पैदा हुए और बढ़े जिनमें दुनिया को देखने की दूसरी दृष्टि थी। इसी देश में चार्वाकों ने यह बात कही कि दुनिया मोह–माया नहीं बल्कि सच्ची है और हमारे दुःख के कारण इसी सामाजिक भौतिक जगत में हैं। •

साभार : दि बुद्धिस्ट टाईम्स

हिमायती
4 / सितम्बर (प्रथम), 2019 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 1-2 सितम्बर, 2019

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 30 अगस्त, 2019

सम्पादकीय का शेष...रविदास मंदिर गिराने के विरोध में रामलीला मैदान में उमड़ा जन सैलाब

भारी रोष प्रदर्शन को मूक बनी देखती रही। गुरु रविदास जी के भक्तों का अनुशासन भी प्रशंसा योग्य था जहां न कोई नेतृत्व करने वाला नेता था, न अगुवाई करने वाला कोई संत गुरू या सामाजिक कार्यकर्ता। इस विशाल विरोध प्रदर्शन में शामिल गुरुभक्त अपनी जिम्मेदारी बाखूबीयत के साथ निभाते हुए बढ़–चढ़कर विरोध में अपनी आवाज बुलन्द कर रहा था।

इस विरोध प्रदर्शन में पठानकोट (पंजाब) से स्वामी गुरदीप गिरी जी महाराज, काहनपुर (जालंधर) पंजाब से संत सुरिन्दर बाबा, गुरु रविदास मन्दिर, कात्रज (पुणे) महाराष्ट्र से संत सुखदेव वाघमारे, रविदास आश्रम, रंगपुरी (उत्तर प्रदेश) से श्री संतवीर सिंह हितकारी, चर्मकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. बबनराव घोलप, भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. एस.पी. सुमनाक्षर के अलावा भीम आर्मी के मुखिया चन्द्रशेखर उर्फ रावण प्रदर्शन को सफल बनाने में जुटे थे।

तुगलकाबाद का संत रविदास मन्दिर लगभग छह सौ साल पुराना है। गुरु रविदास जी पंजाब गुरु नानक देव जी से मिलने जाते समय कुछ दिन यहां ठहरे थे। उस समय देश में सिकन्दर लोधी का शासन था। वह अन्य राजाओं–महाराजाओं की तरह गुरु रविदासजी की आध्यात्मिक शक्ति से प्रभावित था, इसलिए श्रद्धावत उसने गुरुजी की स्मृति में यह संत रविदास मन्दिर अपने किले का पास बनवाया था। मन्दिर के पास प्राचीन कुआं और तालाब भी है जो 'चमार की जोहड़ी' के नाम से पटवारी के खाता–गिरदावरी में दर्ज है। गुरु रविदास जी के चरण पड़ने के कारण इस मन्दिर का खास महत्व है इसलिए उनके भक्त यहां आकर एक अलग तरह का 'सुकून' की अनुभूति पाते हैं। यह मन्दिर रविदास जी के अनुयायियों के लिए आस्था और आध्यात्मिक शक्ति का केन्द्र होने के कारण उनके मान–सम्मान से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए इस मन्दिर को केन्द्र सरकार के 'डी.डी.ए.' द्वारा वनक्षेत्र में अनाधिकृत निर्माण मानकर अदालत द्वारा आदेश लेकर गिरा देना दलित समाज अपना अपमान मानता है। इस लिए इस मन्दिर के तोड़ने के कृत्य की निन्दा करने और इसका पुनःनिर्माण करने की मांग करने के लिए यह विशाल प्रदर्शन किया गया।

यह पहली बार है जब सभी राजनीतिक पार्टियों ने एक आवाज में मन्दिर तोड़ने की निन्दा की है और इस मन्दिर को उसी जगह पर सरकार द्वारा बनाये जाने की मांग की है।

गुरु रविदास जी के प्रदर्शनकारियों भक्तों का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ भी गुस्सा है। उनका कहना है कि एक ओर तो वे वाराणसी के गुरु रविदास मन्दिर में जाकर मत्था टेककर उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित करते हैं, वहीं देश की राजधानी में उनके मन्दिर को तोड़ते देखकर भी कुछ नहीं कहते।

21 अगस्त, 2019 को दिल्ली के रामलीला मैदान में तुगलकाबाद में गुरु रविदास मंदिर को तोड़ने के विरोध में हुए विशाल प्रदर्शन की मांग पर अपनी सहमति जताते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने कहा है कि केन्द्र उसी जगह पर संत रविदास मन्दिर बनवाये, दिल्ली सरकार उसके निर्माण का पैसा देगी। उन्होंने केन्द्र सरकार से संत रविदास मन्दिर बनवाने के लिए अध्यादेश लाने की मांग की, क्योंकि 9 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने 'डी.डी.ए.' की मांग पर मन्दिर तोड़ने का आदेश दिया था और 'डी. डी.ए.' ने उस पर तुरन्त कार्रवाई करते हुए अगले दिन 10 अगस्त को मन्दिर को तुड़वा दिया था, बिना संत रविदास जी के भक्तों की भावना की परवाह किये। अब 'आप' पार्टी के नेता अरविन्द केजरीवाल के संत रविदास मन्दिर को अपने खर्चे पर दिल्ली सरकार द्वारा बनाये जाने के सर्व–सम्मति से पारित किये गये प्रस्ताव के बाद भाजपा के प्रतिपक्ष नेता विजेन्द्र गुप्ता, विधायक ने कहा है कि पुनः केन्द्र सरकार द्वारा संत रविदास मन्दिर बनाने के लिए हमारा समर्थन है। भाजपा के दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष संसद मनोज तिवारी ने भी कहा है कि संत रविदास मन्दिर हम बनाकर देंगे।

कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी का कहना है कि गुरु रविदास जी के अनुयायियों की भावना का आदर हो और केन्द्र सरकार वहीं पर नया मन्दिर बनवाकर दलित समाज को समर्पित करे। संत रविदास मंदिर पर दिल्ली विधानसभा में चर्चा के दौरान 'आप' विधायक अमानतुल्लाह खां ने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि यह दलितों की आस्था पर हमला है। अगर केन्द्र वहीं पर संत रविदास मन्दिर को बनवायेगा, तो दिल्ली वक्फ बोर्ड उसके निर्माण का खर्चा देने के लिए तैयार है।

21 अगस्त के संत रविदास मन्दिर के तोड़ने के विरोध में हुए विशाल विरोध प्रदर्शन और सभी धार्मिक संस्थाओं, राजनीतिक पार्टियों व देश के माननीय सन्तों–महन्तों–सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से मिले अपार समर्थन से भाजपा व उसकी केन्द्र सरकार की नींद टूटी है और आगामी 4-5 राज्यों के विधान चुनावों में इससे होने वाले नुकसान का आकलन करने में जुट गई है। देखते हैं कि वह इस नुकसान से अपने को बचाने के लिए तुगलकाबाद के संत रविदास मन्दिर को बनवाने के लिए सुप्रीम कोर्ट के आदेश को निरस्त करने के लिए अध्यादेश कब लाने वाली है? •

– डा. सुमनाक्षर

35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 8-9 दिसम्बर, 2019 को दिल्ली में

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में द्विदिवसीय 35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन पंचशील आश्रम, झड़ोदा गांव, (बुराड़ी बाई पास), निरंकारी समागम ग्राउंड के सामने, आउटर रिंग रोड, दिल्ली–84 में 8-9 दिसम्बर, 2019 को आयोजित किया जा रहा है। इसमें देश के सभी राज्यों के, सभी भाषाओं के दलितोत्थान में जुटे दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, सम्पादक आदि भाग लेंगे जो दलितोत्थान विषयों पर विचार–विमर्श करेंगे। दलित नेताओं को भी इस सम्मेलन में आमत्रित किया गया है।

सम्मेलन में दलितोत्थान में कार्यरत दलित साहित्यकारों, दलित लेखकों, कलाकारों, पत्रकारों और समाजसेवियों को बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर, महात्मा जोतिबा फुले, भगवान बुद्ध, वीरांगना सावित्रीबाई फुले आदि राष्ट्रीय अवार्डों से सम्मानित किया जायेगा। आप सम्मेलन में इन अवार्डों से सम्मानार्थ अपना 'बायोडाटा' अकादमी कार्यालय को भेज सकते हैं। इस अवसर पर प्रकाशित 'अकादमी–स्मारिका' के लिए आप अपनी रचना भी भेज सकते हैं।

सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप में आप शामिल होकर दलितोत्थान विषयों पर अपने विचार भी रख सकेंगे। इसके लिए आपको अपने विचार/ उद्‌बोधन/सुझावों को लिखित रूप में अग्रिम भेजना होगा। सम्मेलन से सम्बन्धित अन्य जानकारी आप हमारे फोन/मोबाईल पर सम्पर्क करके ले सकते हैं।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर	कार्यालय	जय सुमनाक्षर
राष्ट्रीय अध्यक्ष	फोन: 011-27421449	*राष्ट्रीय महासचिव*
मो. : 9810278936	011-27421460	मो. 9891989175

E-mail: jay.sumanakshar@gmail.com

हम भी चाहते हैं कि खत्म हो आरक्षण लेकिन...

• चन्द्रभूषण सिंह यादव

खत्म करो आरक्षण, यह मेरी भी मांग है पर अपनी मां की कोख से इस देश में जातिगत श्रेष्ठता का आरक्षण लेकर जन्म लेने वाले तथाकथित भूसुरो! यह जातिगत आरक्षण खत्म नहीं करोगे? दोमुंहे जातिवादियों! एक तरफ जाति का गुमान भी रखोगे और दूसरी तरफ आरक्षण का विरोध भी करोगे? कान खोलकर सुन लो, यह नहीं चलने वाला है।

हम भी आरक्षण नहीं चाहते हैं, कोई दलित पिछड़ा, वंचित, उपेक्षित, शोषित, पीड़ित, अहीर, कोहार, चमार, दुसाध क्यों आरक्षण चाहेगा **लेकिन पहले यह बताओ अभिजात्य जनों! कि तुम कई हजार वर्ष से पुरोहिताई का आरक्षण किस कानून से लिये हो?** तुमने पढ़ने और पढ़ाने, लड़ने और राज चलाने धन अर्जित करने व व्यापार चलाने का आरक्षण किस अधिकार से ले रखा है तथा हमारे जिम्मे श्रम कर बमुश्किल क्षुधा मिटाने की कोशिश में सन्नद्ध रहने का आरक्षण किस बिना पर दे रखा है?

यह देश हमारा है, हम मूल निवासी बहुजनों का है लेकिन हमें नीच, अधम, शूद्र, दानव, राक्षस, असुर आदि कहते हुए तुमने हमें और हमारे पुरखों को किस आरक्षण के कारण शिक्षा, सम्पत्ति, सम्मान से महरूम कर रखा है, कथित श्रेष्ठजनो! आखिर तुम्हें यह आरक्षण कहां से मिला है कि **तुम जनेऊ पहन श्रेष्ठ बन जाओ और हम हल चला निम्न जाति के रहें?** क्या इसे खत्म करने का अभियान चलाने के लिए कोई और आयेगा? केवल वंचितों के आरक्षण से ही तुम्हारी ऐसी–तैसी होती है?

देखो भाई! अब तुम्हारी चोंचलेबाजी नहीं चलेगी, तुम्हें यदि आरक्षण से परेशानी है तो हमें भी तुम्हारी जाति से दिक्कत है। चलो अब हम और तुम दोनों लोग मिल करके आरक्षण और जाति खत्म करने की शुरुआत करें।

पुरोहित जी! आप एक पहल करो कि पहले जाति खत्म हो फिर हमें आरक्षण की कोई जरूरत न होगी और हम आरक्षण खत्म करने की मांग कर डालेंगे। टीका लगा श्रेष्ठ बने कथित पण्डित जी! आप एक लाइन के कानून की मांग करो कि जो कोई व्यक्ति अपनी शादी अपनी जाति में करेगा वह भारतीय नागरिकता से महरूम कर दिया जाएगा। अपने माता–पिता की सम्पत्ति का हकदार न होगा। जहां जाति टूटी वहीं आरक्षण की जरूरत खत्म। काहे आरक्षण के खिलाफ आंदोलन करोगे जन्मजात बाबा जी! जाति खत्म करो न बाबा जी! हम भी आपके अभियान में दो रद्दा रख देंगे लेकिन ऐसा करने में तुझे पसीना आ जायेगा क्योंकि इससे तेरे जाति का अभिमान टूट जाएगा। **तुम्हें शूद्र के साथ बैठने, खाने, शादी सम्बन्ध** बनाने में घुटन होती है, इसमें तेरा जातीय स्वाभिमान आड़े आता है। जाति बनी भी रहे और आरक्षण खत्म भी हो जाये, यह नहीं चलने वाला है बाबा जी!

बड़ी जाति के मनुवादी आरक्षण का गहना तुम्हारे पास सुरक्षित रहे और निम्न जाति का दंश हमें मुबारक बना रहे और अम्बेडकर कृत संवैधानिक आरक्षण खत्म भी हो जाये, यह नहीं चलने वाला है। आरक्षण खत्म हो पर जाति भी खत्म हो वरना यदि जाति बनी रहेंगी तो आरक्षण शाश्वत बना रहेगा। •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009